"सज्जण"

- मित्र घणेरे करि थकी मेरा दुख काटै कोई । मिल प्रीतम दुख कटिआ सबदि मिलावा होई ।

अर्थ:- दुनिया के बहुत सारे सम्बंधियों को मित्र बना के मैं थक चुकी हूँ मैं समझती रही कि कोई साक - संबंधी मेरा दुख काट सकेगा । प्रभु - प्रीतम को मिल के ही दुख काटा जाता है, गुरु के शब्द द्वारा ही उसका मिलाप होता है ।

सच खटणा सच रासि है सचे सची सोई । सचि मिले से

न विछुड़हि नानक गुरमुख होई । (3-37)

अर्थः- हे नानक ! गुरु के सन्मुख हो के जो मनुष्य सदा स्थिर प्रभु में मिल जाते हैं वह दुबारा उस से जुदा नहीं होते । जो मनुष्य सदा स्थिर प्रभु का रूप हो जाता है सदा स्थिर प्रभु का नाम ही उसकी लाभ कमायी हो जाती है, नाम ही उसकी राशि पूंजी बन जाती है तथा उसको सदा कायम रहने वाली शोभा मिलती है ।

- मीठे हरि गुण गाउ जिंद तूं मीठे हरि गुण गाउ । सचे सेती रतिआ मिलिआ निथावे थाउ ।

अर्थः- हे मेरी जिंदे ! तू हरि के प्यारे लगने वाले गुण गाती रहा कर । सदा स्थिर रहने वाले परमात्मा के साथ रंगे रहने से उस मनुष्य को भी हर जगह आदर मिल जाता है, जिसे पहले कोई जगह नहीं मिलती ।

होरि साद सभि फिकिआ तन मन फिका होई । विण परमेसर जो करे फिट सु जीवाण सोई।

अर्थः-हे मेरी जिंदे ! हरि के मीठे गुणों के मुकाबले दुनिया के सारे स्वाद फीके हैं । इन स्वादों में पड़ने से शरीर हरेक ज्ञानेंद्रिय फीकि रूखी हो जाती है, मन खुश्क हो जाता है । परमेश्वर का नाम जपने से वचित होकर मनुष्य जो कुछ भी करता है उससे जिंदगी धिक्कारयोग्य हो जाती है ।

अंचल गहि कै साध का तरणा इह संसार । पारब्रहम आराधीऐ उधरै सभ परवार ।

अर्थः- हे मेरी जिंदे ! गुरु का पल्ला पकड़ के इस संसार समुंदर से पार लांघ सकते हैं । हे जिंदे ! परमात्मा की आराधना करनी चाहिए ।

जो मनुष्य आराधना करता है, उसका सारा परिवार संसार समुंदर के विकारों की लहरों में से बच निकलता है ।

साजन बंध सुमित्र सो हरिनाम हिरदै देई । अउगण सभि मिटाई कै परउपकार करेई ।

अर्थः- हे मेरी जिंदे ! जो गुरमुख परमात्मा का नाम हृदय में बसाने के लिए देता है वही असल सज्जन है, वही असल संबंधी है, वही असली मित्र है, क्योंकि वह हमारे अंदर से सारे अवगुण दूर करके हमारी भलाई करता है ।

माल खजाना थेह घर हरि के चरण निधान । नानक जाचक दरि तेरै प्रभ तुधनो मगै दान । (5-218)

अर्थः- हे मेरी जिंदे ! परमात्मा के चरण ही सारे पदार्थों के खजाने हैं जीव के साथ निभने वाला माल है, खजाना है जीव के वास्ते असली बसेरा व घर है । हे प्रभु ! तेरे दर का भिखारी नानक तेरे दर पर तेरे नाम - दान के तौर पर मांगता है ।

- संत मंडल हरि जस कथहि बोलहि सति सुभाई । नानक मन संतोखीऐ एकस सिउ लिव लाई ।

अर्थः- हे नानक ! संत जन सदा परमात्मा की महिमा उचारते हैं, प्रेम में टिक के सदा कायम रहने वाले प्रभु के गुण बयान करते हैं क्योंकि एक परमात्मा के चरणों में तवज्जो जोड़े रखने से मन शाति रहता है ।

सपतमि संचहु नाम धन टूटि न जाहि भंडार । संतसंगति महि पाईऐ अंत न पारावार ।

अर्थः- हे भाई ! परमात्मा का नाम धन इकट्ठा करो नाम धन के खजाने कभी खत्म नहीं होते पर उस परमात्मा का ये नाम धन साध - संगत में रहने से ही मिलता है जिसके गुणों का अंत नहीं पाया जा सकता ।

आप तजहु गोबिंद भजहु सरनि परहु हरि राई । दूख हरै भवजल तरै मन चिंदिआ फल पाई।

अर्थः- हे भाई ! स्वै भाव दूर करो, परमात्मा का भजन करते रहो, प्रभु पातशाह की शरण पड़े रहो जो मनुष्य प्रभु की शरण पड़ा रहता है, वह अपने सारे दुख दूर कर लेता है, संसार समुंदर से पार लांघ जाता है, और मन चाहा फल प्राप्त कर लेता है ।

आठ पहरि मनि हरि जपै सफल जनम परवाण । अंतरि बाहरि सदा संगि करनैहार पछाण ।

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य आठों पहर अपने मन में परमात्मा का नाम जपता है, उसका मानव जनम कामयाब हो जाता है, वह परमात्मा की हजूरी में स्वीकार हो जाता है, जो परमात्मा हरेक जीव के अंदर बाहर सदा साथ बसता है वह विधाता प्रभु उस मनुष्य का मित्र बन जाता है ।

सो साजन सो सखा मीत जो हरि की मति देई । नानक तिस बलिहारणै हरि हरि नाम जपेई । (5-298)

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य हमें परमात्मा का नाम जपने की मति देता है, वही हमारा असली सज्जन है, साथी है, मित्र है । हे नानक ! कह जो मनुष्य सदा हरि - नाम जपता है, मैं उससे कुर्बान जाता हूँ ।

- नालि इआणे दोसती कदे न आवै रासि । जेहा जाणै तेहो वरतै वेखहु को निरजासि ।

अर्थः- कोई भी मनुष्य परख के देख ले, किसी अंजान से लगाई हुई मित्रता कभी सिरे नहीं चढ़ती, क्योंकि उस अंजान का रवईआ वैसा ही रहता है जैसी उसकी समझ होती है इसी तरह उस मूर्ख मन के आगे लगने का कभी कोई लाभ नहीं होता, ये मन अपनी समझ अनुसार विकारों में ही लिए फिरता है ।

वसतू अंदरि वसतु समावै दूजी होवै पासि । साहिब सेती हुकम न चलै कही बणै अरदासि । कूड़ि कमावै कूड़ो होवै नानक सिफति विगासि ।

अर्थः- किसी एक चीज में कोई और चीज तभी पड़ सकती है अगर उसमें से पहली पड़ी हुई चीज निकाल ली जाए इस तरह इस मन को प्रभु की तरफ जोड़ने के लिए जरूरी है कि इसका पहला स्वभाव तबदील किया जाए । पति से हूकम किया हुआ कामयाब नहीं हो सकता, उसके आगे तो विनम्रता ही फबती है । हे नानक ! धोखे का काम करने से धोखा ही होता है भाव, जितनी देर मनुष्य दुनिया के धंधों में लगा रहता है, तब तक चिन्ता में ही फसा रहता है, मन प्रभु की महिमा करके ही खिड़ाव में आता है, सही मायने में प्रसन्नता पाता है ।

नालि इआणे दोसती वडारु सिउ नेहु । पाणी अंदरि लीक जिउ तिस दा थाउ न थेह ।

अर्थः- अंजान से मित्रता व अपने से बड़े के साथ प्यार ये ऐसे ही हैं जैसे पानी में लकिर, उस लकिर का कोई निशान नहीं रहता ।

होई इआणा करे कम आणि न सकै रासि । जे इक अध चंगी करे दूजी भी वेरासि ।

अर्थः- अगर कोई अंजान हो और वह कोई काम करे, वह काम सिरे नहीं चढ़ सकता अगर कोई एक आध काम वह ठीक कर भी ले तो दूसरे काम को बिगाड़ देगा ।

चाकर लगै चाकरी जे चलै खसमै भाई । हुरमति तिस नो अगली ओह वजहु भि दूणा खाई ।

अर्थः- जो नौकर अपने मालिक की मर्जी के मुताबिक चले तभी समझो, कि वह मालिक की नौकरी कर रहा है, एक तो उसे बड़ी इज्जत मिलती है, दूसरा तनख्वाह भी मालिक से दोगुनी लेता है ।

खसमै करे बराबरी फिरि गैरति अंदरि पाई । वजहु गवाए अगला मुहे मुहि पाणा खाई ।

अर्थः- पर, अगर सेवक अपने मालिक की बराबरी करता है, वह मन में शर्मिंदगी ही उठाता है, अपनी पहली तनख्वाह भी गवा बैठता है और सदा मुंह पर जूतियां खाता है ।

जिस दा दिता खावणा तिस कहीऐ साबासि । नानक हुकमु न चलई नालि खसम चलै अरदासि । (2-474)

अर्थः- हे नानक ! जिस मालिक का दिया हुआ खाएं, उसकी सदा उपमा करनी चाहिए मालिक पर हुक्म नहीं किया जा सकता, उसके आगे अर्ज करनी ही फबती है ।

• सजण मिले सजणा जिन सतगुर नालि पिआर । मिलि प्रीतम तिनी धिआइआ सचै प्रेमि पिआर ।

अर्थः- जिन सत्संगियों का गुरु से प्रेम होता है, वह सत्संगियों को मिलते हैं सत्संगियों को मिल के वही मनुष्य प्रभु प्रीतम को स्मरण करते हैं क्योंकि सच्चे प्यार में उनकी तवज्जो जुड़ी रहती है ।

मन ही ते मन मानिआ गुर कै सबद अपार । एहि सजण मिले न विछुड़हि जि आपि मेले करतार।

अर्थः- सतिगुरु के अपार शब्द की इनायत से उनका मन खुद - ब - खुद ही प्रभु में पतीज जाता है ऐसे सत्संगी मनुष्य एक बार मिले हुए फिर विछुड़ते नहीं हैं, क्योंकि करतार ने खुद इनको मिला दिया है ।

इकना दरसन की परतीत न आइआ सबदि न करहि वीचार । विछुड़िआ का किआ विछुड़ै जिना दूजै भाई पिआर ।

अर्थः- एक विछुड़े हुओं को प्रभु के दीदार का यकीन ही नहीं होता, क्योंकि वे गुरु के शब्द का कभी विचार ही नहीं करते । पर, जिन मनुष्यों की तवज्जो सदा माया के मोह में जुड़ी रहती है, उन प्रभु से विछुड़े हुओं का और विछोड़ा भी क्या होना हुआ ? भाव, माया में फंसे रहने के कारण वे परमात्मा से विछोड़ा महसूस ही नहीं करते ।

मनमुख सेती दोसती थोड़ड़िआ दिन चारि । इस परीती तुटदी विलम न होवई इत दोसती चलनि विकार ।

अर्थः- जो मनुष्य अपने मन के पीछे चलता है उससे मित्रता थोड़े ही दो - चार दिन के लिए ही रह सकती है, इस मित्रता के टूटते हुए देरी नहीं लगती, वैसे भी इस मित्रता में से बुराईयां ही जन्म लेती हैं ।

जिना अंदरि सचे का भउ नाही नामि न करहि पिआर। नानक तिन सिउ किआ कीचै दोसती जि आपि भुलाए करतारि ।

अर्थः- हे नानक ! जिस मनुष्यों के हृदय में परमात्मा का डर नहीं, जो परमात्मा के नाम से कभी प्यार नहीं करते उनके साथ कभी अपनत्व डालना ही नहीं चाहिए ।

इकि सदा इकतै रंगि रहहि तिन कै हउ सद बलिहारै जाउ । तन मन धन अरपी तिन कउ निवि निवि लागउ पाई ।

अर्थः- कई भाग्यशाली मनुष्य एक प्रभु के रंग में ही मस्त रहते हैं, मैं उनसे कुर्बान हूँ मेरा चित्त करता है उपना तन - मन - धन उनकी भेटा कर दूँ और झुक - झुक के उनके पैरों पर लगूँ ।

तिन मिलिआ मन संतोखीऐ तृसना भुख सभ जाई । नानक नामि रते सुखीऐ सदा सचे सिउ लिवलाई ।

अर्थः- उनको मिल के मन को ठंडक पड़ती है, सारी तृष्णा और भूख दूर हो जाती है । हे नानक ! नाम में भीगे हुए मनुष्य सच्चे प्रभु के साथ चित्त जोड़ के सदा सुखी रहते हैं ।

तिस गुर कउ हउ वारिआ जिनि हरि की हरि कथा सुणाई । तिस गुर कउ सदा बलिहारणै जिनि हरि सेवा बणत बनाई ।

अर्थः- मैं सदके हूँ उस सतिगुरु से जिसने प्रभु की बात सुनाई है, और जिसने प्रभु की भक्ति की रीत चलाई है ।

सो सतिगुरू पिआरा मेरै नालि है जिथै किथै मै नो लए छडाई । तिस गुर को साबासि है जिनि हरि सोझी पाई ।

अर्थः- वह प्यारा सतिगुरु मेरे अंग - संग है, हर जगह मुझे विकारों से छुड़वा लेता है शाबाश है उस सतिगुरु को जिसने मुझे परमात्मा की समझ दी है ।

नानक गुर विटहु वारिआ जिनि हरिनाम दीआ मेरे मन की आस पुराई । (3-587-588)

अर्थः- जिस गुरु ने मुझे परमात्मा का नाम दिया है और मेरे मन की आस पूरी की है मैं नानक उससे सदके हूँ ।

- से सैण से सजणा जि गुरमुखि मिलहि सुभाइ । सतिगुर का भाणा अनदिन करहि से सचि रहे समाई ।

अर्थः- सतिगुर के सन्मुख हुए जो मनुष्य स्वै वार के प्रभु में स्वभाविक तौर पर लीन हो जाते हैं वे भले लोग हैं और हमारे साथी हैं जो सदा सतिगुरु की रज़ा को मानते हैं, वे सच्चे हरि में समाए रहते हैं ।

दूजै भाई लगे सजण न अखीअहि जि अभिमान करहि वेकार ।

अर्थः- उन्हें संत जन नहीं कहा जाता जो माया के मोह में लगे हुए अहंकार और विकार करते हैं ।

मनमुख आप सुआरथी कारज न सकहि सवारि । नानक पूरबि लिखिआ कमावणा कोई न मेटणहार । (3-643)

अर्थः- मनमुख अपने मतलब के प्यारे होने के कारण किसी का काम नहीं सँवार सकते पर हे नानक ! उनके सिर भी क्या दोष ? पिछले कर्मों के अनुसार पहले से ही उकरा हुआ संस्कार रूपी लेख कमाना पड़ता है, कोई मिटाने के लायक नहीं ।

- हउ ढूंढेंदी सजणा सजण मैंडै नालि । जन नानक अलख न लखीऐ गुरमुखि देहि दिखालि ।

अर्थः- हे सहेलिए ! मैं सज्जन प्रभु को बाहर ढूँढ रही थी पर, गुरु के माध्यम से समझ आई है कि वह सज्जन प्रभु तो मेरे साथ ही है मेरे अंदर ही बसता है । हे दास नानक ! कह हे सहेलिए ! वह प्रभु अलख है उसका सही स्वरूप बयान नहीं किया जा सकता । गुरु के सन्मुख रहने वाले संत जन उसके दर्शन करवा देते हैं ।

नानक प्रीति लाई तिनि सचै तिस बिन रहण न जाई ।
सतिगुर मिलै त पूरा पाईऐ हरि रसि रसन रसाई ।

अर्थः- हे नानक ! कह हे भाई ! जिस मनुष्य के अंदर उस सदा कायम रहने वाले परमात्मा ने अपना प्यार स्वयं ही पैदा किया है वह मनुष्य उस की याद के बिना रह नहीं सकता । जिस गुरु की जीभ परमात्मा के नाम रस में सदा रसी रहती है जब वह गुरु मिलता है तब वह पूरन प्रभु भी मिल जाता है ।

कोई गावै को सुणै को उचरि सुनावै । जनम जनम की मल उतरै मन चिंदिआ पावै ।

अर्थः- हे भाई ! जो कोई मनुष्य परमात्मा की महिमा के गीत गाता है अथवा सुनता है अथवा बोल के और लोगों को सुनाता है, उसके अनेक जन्मों की विकारों की मैल उतर जाती है वह मन - इच्छित फल पा लेता है ।

आवण जाणा मेटीऐ हरि के गुण गावै । आपि तरहि संगी तराहि सभ कुटंब तरावै । जन नानक तिस बलिहारणै जो मेरे हरि प्रभ भावै । (4-1318)

अर्थः- हे भाई ! जो मनुष्य परमात्मा के गुण गाता है उसका पैदा होने मरने का चक्कर समाप्त हो जाता है । हे भाई ! परमात्मा के

महिमा के गीत गाने वाले मनुष्य स्वयं संसार समुंदर से पार लांघ जाते हैं, साथियों को पार लंघा लेते हैं । हे भाई ! महिमा करने वाला मनुष्य अपने सारे परिवार को पार लंघा लेता है । हे भाई ! दास नानक उस मनुष्य से सदा सदके जाता है जो महिमा करने की इनायत से प्यारे प्रभु को प्यारा लगता है ।

• कबीर सुख न ऐह जुग करहि ज बहुतै मीत । जो चित राखहि एक सिउ ते सुख पावहि नीत । (कबीर-1365)

अर्थः- हे कबीर ! 'दीन' बिसार के परमात्मा को भुला के तू जो पुत्र स्त्री धन जमीन आदि कई मित्र बना रहा है, इस मनुष्य जनम में इन मित्रों से सुख नहीं मिलेगा । सिर्फ वह मनुष्य सदा सुख पाते हैं जो 'दुनिया' में कार्य - व्यवहार करते हुए भी एक परमात्मा के साथ अपना मन जोड़ के रखते हैं ।

फरीदा किथै तैडे मापिआ जिन्ही तू जाणिओहि । तै पासहु ओई लदि गऐ तूं अजै न पतीणोहि । (1381)

अर्थः- हे फरीद ! जीव - पछियों की चलती जा रही डारों का अगर तुझे ख्याल नहीं आया, तो यही देख कि तेरे अपने माता - पिता कहाँ हैं, जिन्होंने तुझे पैदा किया था । वह तेरे माता - पिता तेरे पास से कब के चले गए हैं । तुझे अभी भी यकीन नहीं आया कि तूने तो यहाँ से चले जाना है, इसी लिए रब की बंदगी से गाफिल होया हुआ है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"